Q. In Gender inequality or differentiation also school curriculum - syllabus. How? Explain with Examples.

क्या विद्यालयी पाठ्यचर्या- पाठ्यक्रम के माध्यम से भी जेण्डर विभेद को बढ़ावा दिया जाता है? तर्क एवं उदाहरण देते हुए स्पष्ट करें।

Ans विद्यालयी पाठ्यचर्या पाठ्यक्रम के माध्यम से जेंडर विभेद एक सामाजिक विचारधारा की देन है क्योंकि सामाजिक परिवेश में जो भाषा एवं कार्य का निर्धारण हमें प्राप्त होता है वह निर्धारण एक पक्षीय विकास को भाषा एवं अन्य विकासों को तुलनात्मक रूपों में माना गया है। यहाँ तक कि पाठ्यचर्या पाठ्यक्रम में भी मात्र इस बिंदु को रेखांकित करते हुए संदर्भित ज्ञान के क्षेत्रों को विभेद के रूप में ही स्वीकार कर प्रयोग की जा रही है। हम जानते हैं कि पाठ्यचर्या के माध्यम से जेंडर एक मुद्दे के रूप में ही रेखांकित है। यह पाठ्यक्रम का एक शीर्षक मात्र है जिसके अंतर को भी लिंग के आधार पर वर्णित की गई है न कि भाषायी प्रयोग की समानता सूचक शब्दों से।

इस संदर्भ में भाषा विशेषज्ञों का हमेशा

से मत रहा है कि कार्य क्षमता का निर्धारण भौतिक रूपों में ही हो और इसी आधार पर भाषा के शब्द एवं वाक्य के प्रयोग को जोड़ी गई है।

विद्यालय पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम के जेंडर के माध्यम से जो बढ़ावा विभेदीकरण के लिए उत्पन्न हुई है, वे बाधा निम्न हैं:-

(i) भाषा के आधार पर
(ii) सामाजिक आधार पर
(iii) सांस्कृतिक आधार पर
(iv) राजनीतिक आधार पर

(i) भाषा के आधार पर :- विद्यालय पाठ्यचर्या में किए जानेवाले प्रत्येक कार्य एक भाषा के माध्यम से संचालित होती है और वह भाषा विद्यालयी भाषा के रूप में मानी जाती है। यह पाठ्यचर्या के एक अंग ही होते हैं जिसके द्वारा यह निर्देशित की जाती है कि यह विषयवस्तु, अमुक माध्यम से ही अध्ययन-अध्यापन में वास्तविकता को जोड़ सकती है। इसलिए पाठ्यचर्या में भाषा पर विशेष बल दिया जाता है।

(ii) सामाजिक आधार पर :- पाठ्यचर्या के निर्माण से पहले शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञानार्जन का आधार पाठ्यपुस्तक, पाठ्यक्रम पर केंद्रित

होती थी और उसके केंद्र बिंदु शिक्षा के प्रक्रिया या उद्देश्य प्राप्ति के लिए शिक्षक, छात्र और पाठ्यपुस्तक एक-दूसरे से अर्जन की क्रिया को संपन्न करते थे - वह मात्र विषयगत आधारित होती थी लेकिन जब से पाठ्यचर्या सम्मिलित की गई तो मात्र छात्र-केंद्रित शिक्षा की विकास को आधार बनाया गया और विषय-वस्तु के क्षेत्र को सामाजिक परिवेश से जोड़ा गया।

(iii) <u>सांस्कृतिक आधार पर</u> :→

विद्यालय पाठ्यचर्या में सांस्कृतिक आधार एक प्राचीन एवं नवीन संकल्पना को जोड़ने का कार्य करती है। सभ्य समाज की संरचना उसके संस्कृति पर निर्भर करती है। वह संस्कृति एक सामुदायिक पहचान भी होती है। जब किसी व्यक्ति या समूह के माध्यम से व्यक्तिगत रूपों में या व्यक्तिगत विचारों में वर्णित की। वहीं से संस्कृति व सभ्यता की पहचान एक विशेष के रूप में विकसित होने लगती है और सांस्कृतिक पहचान को समस्या मूलक बना देती है। आज नवीन पाठ्यचर्या में सांस्कृतिक आधार जोड़ने का उद्देश्य समतामूलक समाज का निर्माण करना है और उस निर्माण

प्रक्रिया को एक विस्थापन के माध्यम से स्थापित कर ज्ञानार्जन के क्षेत्र के लिए सांस्कृतिक आधार विकसित की जाय।

(iv) राजनीतिक आधार पर :-

विद्यालय पाठ्यचर्या में राजनीतिक आधार पर एक क्षेत्र एवं नीति पर आधारित संकल्पना होती है जिसमें क्षेत्रीयता निहित होते हैं। उनके सिद्धांत क्षेत्र के आधार पर विकसित होते हैं और वह विकास के रूप में क्षेत्र बन जाता है। अब वह क्षेत्र व्यक्तिगत रूपों में विकसित होती है तो क्षेत्रवाद के द्वारा विभेदीकरण की प्रक्रिया बढ़ जाती है। जैसे - भारतीय प्रसंग में - अगर बिहार के लोग महाराष्ट्र में रोजी-रोटी के लिए रहना चाहते हैं तो उन्हें क्षेत्रवाद के द्वारा बाधा पहुँचाई जाती है लेकिन संवैधानिक प्रावधानों के अनुरूप हमें अपने राष्ट्र के किसी भी क्षेत्र में रहने एवं रोजगार करने की स्वतंत्रता वर्णित है।

उपरोक्त बिंदु के आधार पर अगर विद्यालय पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम में विभेदीकरण विकास को रोकना है तो हर क्षेत्र की पाठ्यचर्या के आधार पर प्रांतीय स्तर पर क्षेत्रीय संसाधनों का ज्ञान दर्शन कराया जाय जिससे किसी तरह की विभेद विकास का कारण एवं समस्या उत्पन्न नहीं होगी।